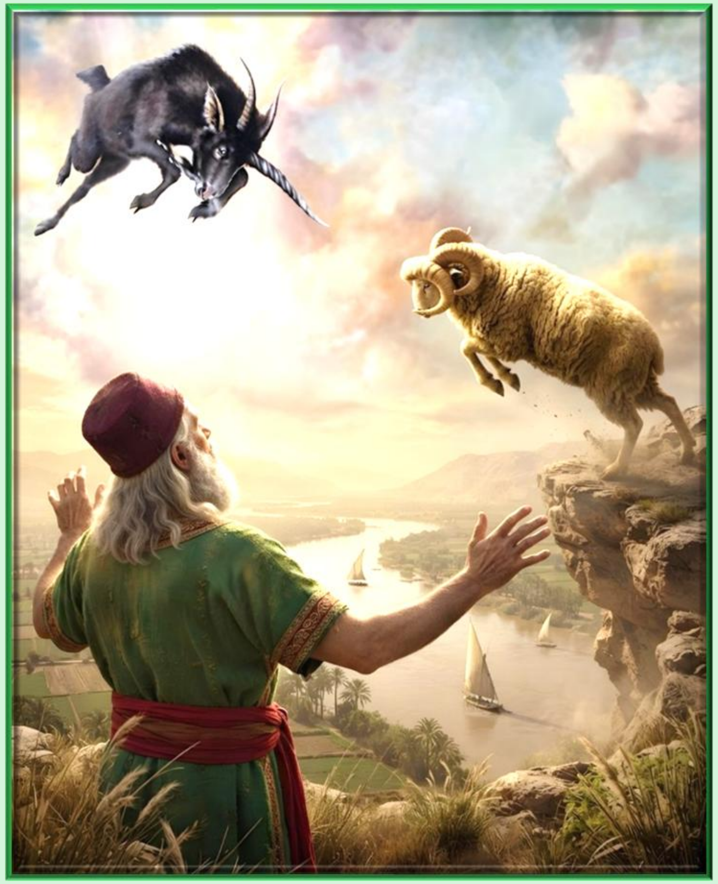

भविष्यद्वक्ता का बुलावा

पाठ 2 अक्टूबर 10, 2026 के लिए

हिंदी अनुवादक: पादरी विजय पाल सिंह

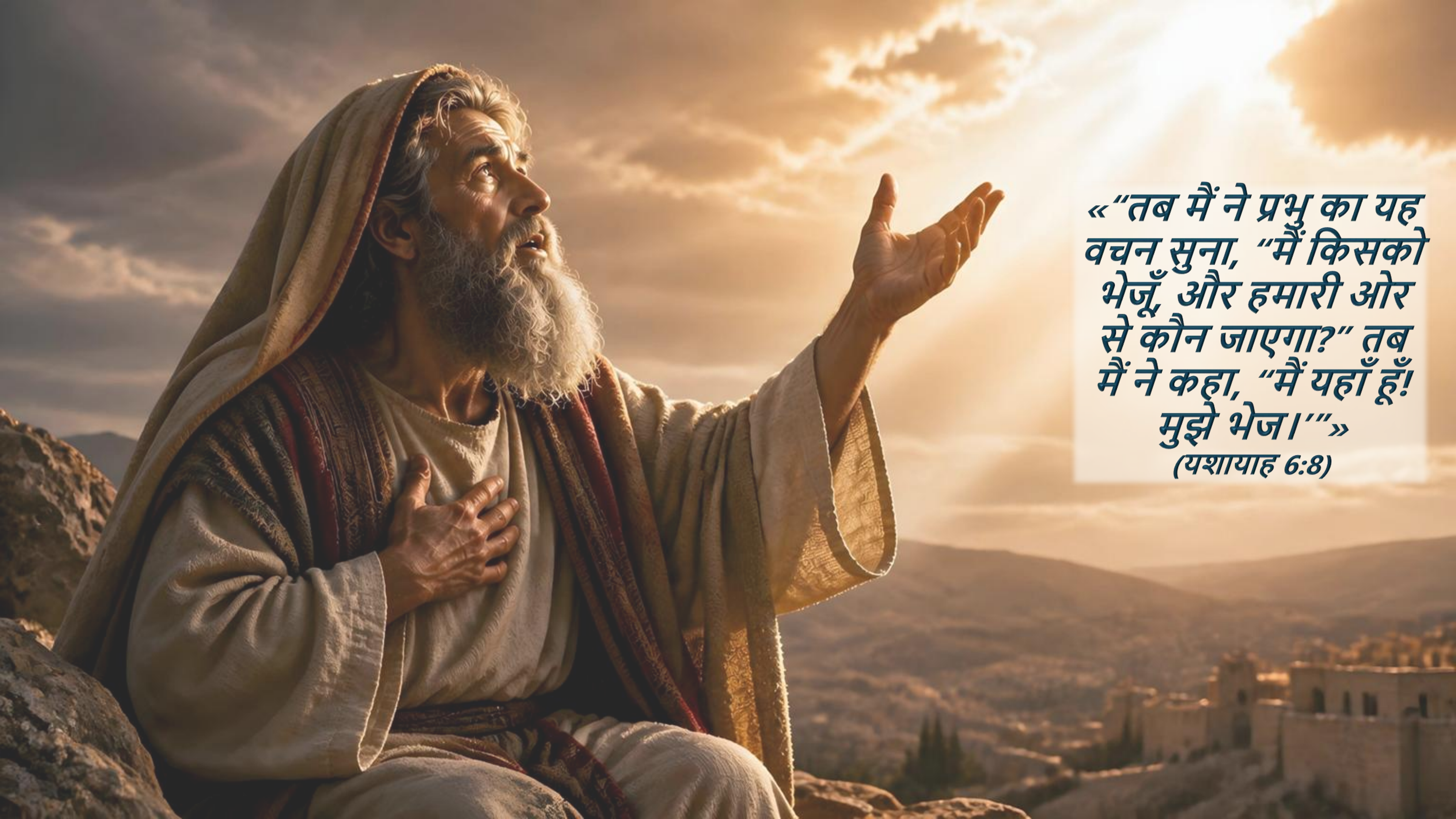
«“तब मैं ने प्रभु का यह
वचन सुना, “मैं किसको
भेजूँ, और हमारी ओर
से कौन जाएगा?” तब
मैं ने कहा, “मैं यहाँ हूँ!
मुझे भेज।’”»
(यशायाह 6:8)

अब्राहम (पुराने नियम के पहले भविष्यद्वक्ता) से लेकर यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले (नए नियम के पहले भविष्यद्वक्ता) तक लगभग 1,900 वर्ष का अंतर है।

पहले ने "वंशज" के द्वारा वाचा की घोषणा की। दूसरे ने "वंशज" (यीशु) के आगमन की घोषणा की, जो प्रतिज्ञा की गई वाचा को पूरा करनेवाला था।

इस बीच, अन्य भविष्यद्वक्ताओं को लोगों और परमेश्वर के बीच संबंध को पुनःस्थापित करने और मसीहा की प्रतीक्षा को बनाए रखने के लिए बुलाया गया। कुछ ने तो मसीहा के आगमन का ठीक समय भी बताया।

इन भविष्यद्वक्ताओं को कैसे चुना गया? उन्होंने अपने भविष्यद्वक्ता के बुलावे का किस प्रकार उत्तर दिया?

- अब्राहम: वाचा का भविष्यद्वक्ता
- एलिय्याह: पुनर्स्थापना का भविष्यद्वक्ता
- यशायाह: मसीहाई भविष्यद्वक्ता
- दानिय्येल: भविष्य का भविष्यद्वक्ता
- यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला: मार्ग सीधा करनेवाला भविष्यद्वक्ता

अब्राहम: वाचा का भविष्यद्वक्ता

“यहोवा ने अब्राम से कहा, “अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।’” (उत्पत्ति 12:1)

अब्राहम पहला व्यक्ति है जिसे “भविष्यद्वक्ता” कहा गया है (उत्पत्ति 20:7)। परमेश्वर ने उसे सीधे बुलाया और उसके चारों ओर फैली मूर्तिपूजा और अनैतिकता को छोड़कर एक अज्ञात स्थान पर जाने के लिए कहा (उत्पत्ति 12:1)।

इस बुलाहट के साथ कई प्रतिज्ञाएँ भी दी गईं। उस पर परमेश्वर की आशीष होगी, वह प्रतिष्ठित होगा, और उसके द्वारा “भूमण्डल के सारे कुलों” तक आशीष पहुँचेगी (उत्पत्ति 12:2-3)।

उसने इस बुलाहट का उत्तर कैसे दिया? “विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था; और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूँ, तौभी निकल गया।” (इब्रानियों 11:8)।

एक भविष्यद्वक्ता के रूप में, अब्राहम को आनेवाली विपत्ति की घोषणा करने के लिए नहीं, बल्कि सच्चे परमेश्वर को प्रकट करने और मसीहा के द्वारा उद्धार की प्रतिज्ञा को प्रकट करने के लिए बुलाया गया था।

अब्राहम: वाचा का भविष्यद्वक्ता

“यहोवा ने अब्राम से कहा, “अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।’” (उत्पत्ति 12:1)

कनान में अपने प्रवास के दौरान, अब्राहम (जिसका मूल नाम अब्राम था) की परमेश्वर के साथ कई बार भेंट हुई, जिसमें उसे विभिन्न सन्देश मिले:

शकेम में उसे प्रतिज्ञा दी गई कि उसके वंशज कनान देश के अधिकारी होंगे (उत्पत्ति 12:6-7)

बेतेल में परमेश्वर ने अपनी वाचा को नवीनीकृत किया और उससे कहा कि उसके वंशज “पृथ्वी की धूल के किनकों के समान” होंगे (उत्पत्ति 13:14-18)

मम्रे में उसे आश्वासन दिया गया कि उसके वंशज आकाश के तारों के समान असंख्य होंगे। “अब्राम ने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।” (उत्पत्ति 15:1-6)

उसी समय, परमेश्वर ने अब्राम के साथ वाचा बाँधी और बलिदानों के बीच से होकर गुजरा। (उत्पत्ति 15:7-21)

परमेश्वर ने उसका और सारा का नाम बदल दिया और उसे आश्वासन दिया कि उसका वंशज सारा का पुत्र होगा। (उत्पत्ति 17:1-8, 15-16)

शारीरिक रूप से, परमेश्वर दो स्वर्गदूतों के साथ अब्राहम के सामने प्रकट हुआ और उसे इसहाक के जन्म की सूचना दी। (उत्पत्ति 18:1-2, 10)

परमेश्वर ने अब्राहम से अपने पुत्र इसहाक को बलिदान करने के लिए कहा। एक स्थानापन्न बलिदान प्रदान करके, उसे उद्धार की महान योजना प्रकट की गई (उत्पत्ति 22:1-3, 9-13)।

एलिय्याह: पुनर्स्थापना का भविष्यद्वक्ता

"सुन, तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है, उस पर यदि कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में चुभकर छेदेगा। मिस्र का राजा फ़िरौन अपने सब भरोसा रखनेवालों के लिये ऐसा ही है।" (2 राजाओं 18:21)

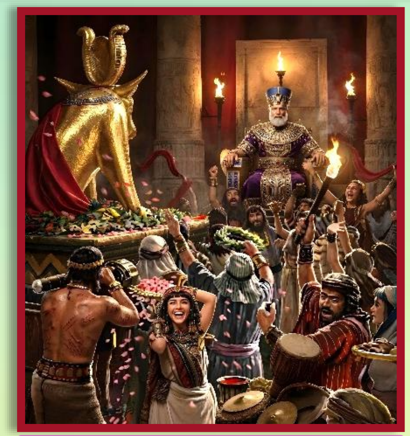

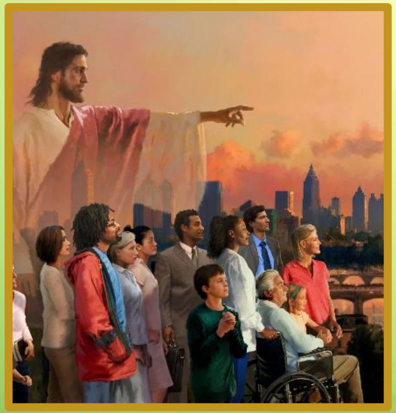

आहाब और ईज़ेबेल इस्राएल राष्ट्र को गंभीर धर्मत्याग की ओर ले गए थे। केवल कुछ ही लोग परमेश्वर की सेवा करते थे; बाकी बाल, अशेरा और अन्य देवताओं की उपासना करते थे। इसी परिस्थिति में, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को अपने चुने हुए लोगों के साथ अपने संबंध को पुनर्स्थापित करने के लिए बुलाया (1 राजाओं 17:1)।

कई वर्षों के सूखे के बाद, एलिय्याह ने इस्राएल को कर्मेल पर्वत पर बुलाया और उन्हें परमेश्वर की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया, लेकिन उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी (1 राजाओं 18:21)। सच्चे परमेश्वर को पहचानने के लिए उन्हें एक आश्चर्यकर्म की आवश्यकता थी (1 राजाओं 18:30-39)।

भविष्यद्वक्ता एलिय्याह का सन्देश—मूर्तिपूजा को छोड़कर परमेश्वर की ओर लौटना—दूसरे आगमन से पहले फिर से सामर्थ्य के साथ घोषित किया जाएगा। इसका मुख्य उद्देश्य है: पारिवारिक वेदी को पुनर्स्थापित करना (मलाकी 4:5-6)।

परिवार के माध्यम से, कलीसिया, समुदायों और राष्ट्रों में आराधना पुनर्स्थापित की जाएगी। यह कार्य कौन करेगा? आज समाज को जिस एलिय्याह की आवश्यकता है, वह आप और मैं हैं।

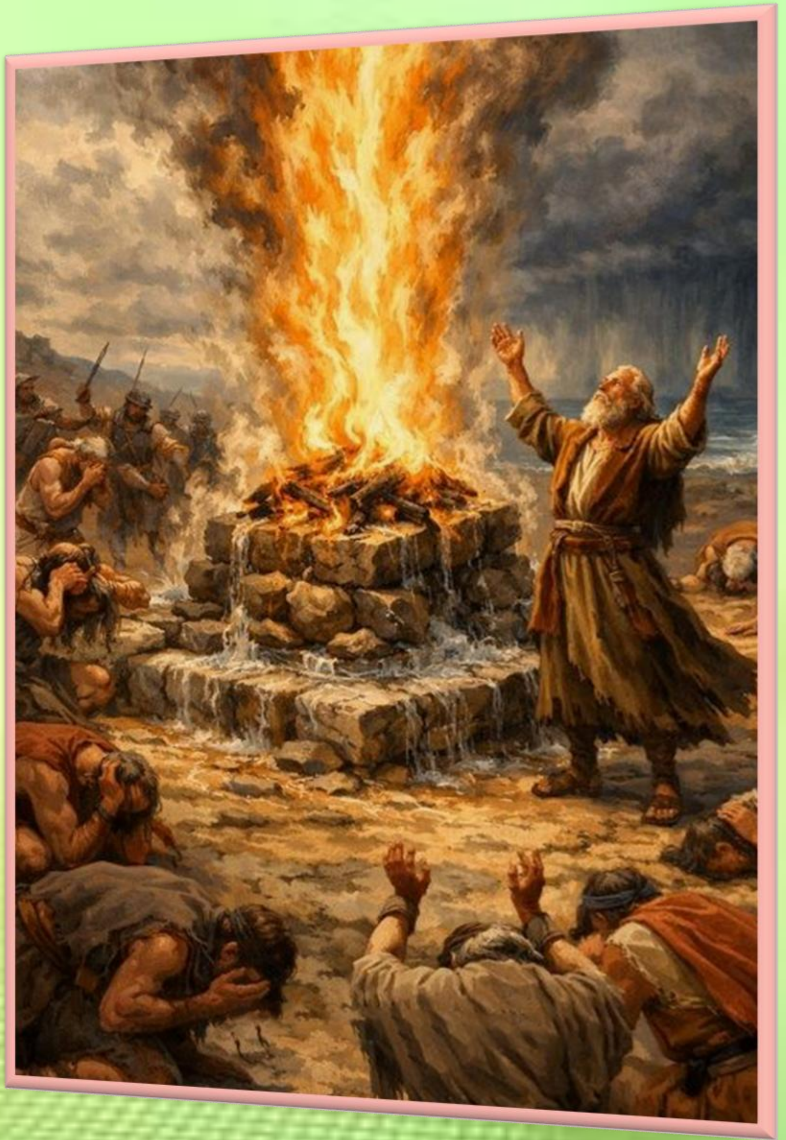

यशायाह: मसीहाई भविष्यद्वक्ता

“हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।” (यशायाह 53:6)

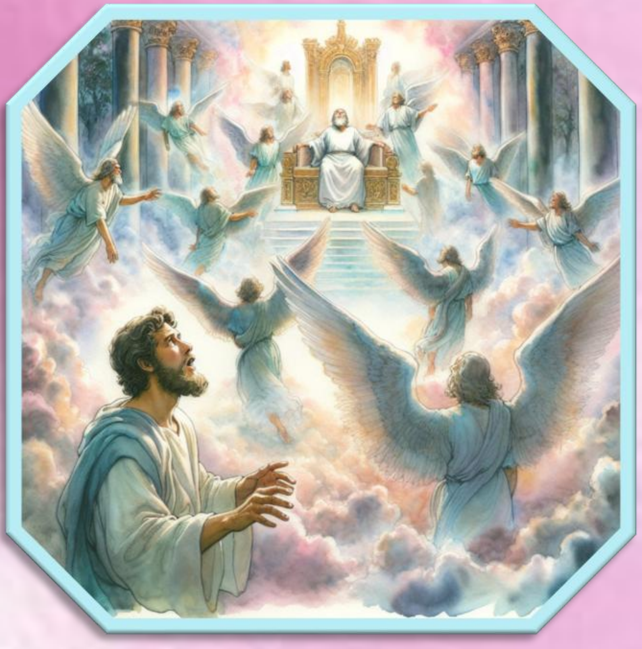

यशायाह को लोगों से अपने पाप को स्वीकार करने और परमेश्वर की क्षमा को ग्रहण करने के लिए कहने के लिए बुलाया गया था (यशायाह 1:18)।

जब राजा उज्जियाह की मृत्यु हुई, तब यशायाह को एक प्रभावशाली दर्शन मिला, जिसे वह अपनी पूरी सेवकाई के दौरान याद रखता रहा: परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में था और जब डेवढ़ियों की नीवें डोल उठीं, तब अपनी अयोग्यता के कारण भविष्यद्वक्ता का हृदय भी काँप उठा (यशायाह 6:1-5)।

क्षमा प्राप्त करने के बाद, वह बिना किसी भय के परमेश्वर के सन्देश की घोषणा करने में सक्षम हुआ: “मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज” (यशायाह 6:6-8)।

उसकी लम्बी सेवकाई में न केवल पश्चाताप का आह्वान शामिल था, बल्कि उसने विशेष रूप से यीशु, मसीहा के कार्य की घोषणा की।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यशायाह की पुस्तक को “आदि-सुसमाचार” कहा जाता है (अर्थात्, सुसमाचार से पहले का सुसमाचार)।

यशायाह: मसीहाई भविष्यद्वक्ता

“हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।” (यशायाह 53:6)

यशायाह के अध्याय 53 में यीशु द्वारा पूरी की गई उद्धार की योजना का विस्तृत वर्णन है:

उसका आकर्षण शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक था (पद्य 2)

वह तुच्छ जाना गया, दुख उठाया और ठुकराया गया (पद्य 3)

यद्यपि उसने बहुतों को चंगा किया, फिर भी उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया (पद्य 4)

क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा वह हमें उद्धार प्रदान करता है (पद्य 5)

परमेश्वर ने हमारे सभी पापों का भार उस पर डाल दिया (पद्य 6)

उसने अपने दोष लगानेवालों के सामने अपना बचाव नहीं किया (पद्य 7)

उस पर मुकदमा चलाया गया और मृत्यु की दण्डाज्ञा दी गई (पद्य 8)

उसे धनवानों के साथ दफनाया गया (पद्य 9ए)

उसने कभी पाप नहीं किया (पद्य 9बी)

अपने प्रायश्चित की मृत्यु के बाद वह फिर जी उठा (पद्य 10)

एक दिन वह उन लोगों के साथ रहेगा जिन्हें उसने छुड़ाया है (पद्य 11)

इस बीच, वह हमारे लिए मध्यस्थता करता है (पद्य 12)

दानिय्येल: भविष्य का भविष्यद्वक्ता

"परन्तु भेदों का प्रगटकर्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को बताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होनेवाला है।" (दानिय्येल 2:28ए)

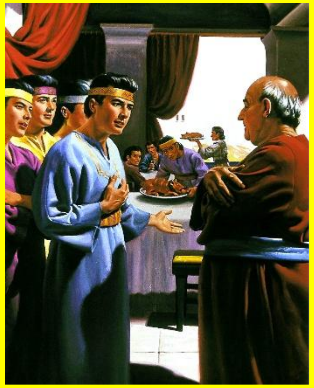

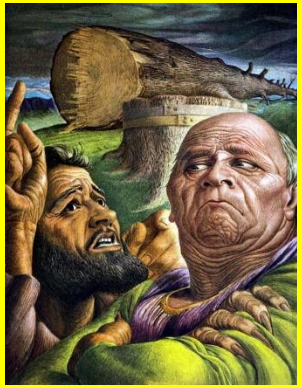
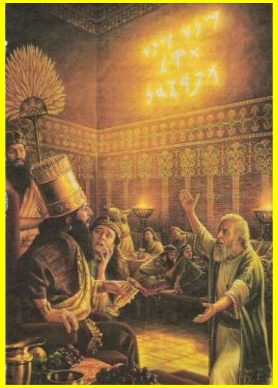

शुरू से ही, दानिय्येल अपनी विश्वासयोग्यता के लिए जाना जाता था। वह अपने आहार में विश्वासयोग्य था (दानिय्येल 1:8); वह परमेश्वर को महिमा देने में विश्वासयोग्य था (दानिय्येल 2:27-30); वह नबूकदनेस्सर के लिए आनेवाली विपत्ति की भविष्यवाणी करने में विश्वासयोग्य था (दानिय्येल 4:19); वह बेलशस्सर के पाप की निन्दा करने में विश्वासयोग्य था (दानिय्येल 5:22-23); वह अपने प्रार्थना के जीवन में विश्वासयोग्य था (दानिय्येल 6:10)।

अपने जीवन के द्वारा दिए गए सन्देश के अतिरिक्त, उसे महान विश्व साम्राज्यों के उत्थान और पतन की घोषणा करने के लिए बुलाया गया: बाबुल, फारस, यूनान, रोम और यूरोप (दानिय्येल 2, 7-12)।

साम्राज्यों से संबंधित भविष्यवाणियों के बीच, दानिय्येल ने न्याय की घोषणा की (दानिय्येल 7:9-10) और यीशु के प्रथम आगमन का ठीक समय बताया (दानिय्येल 9:24-27)।

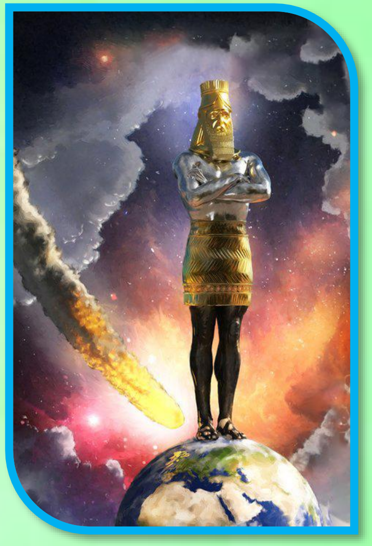
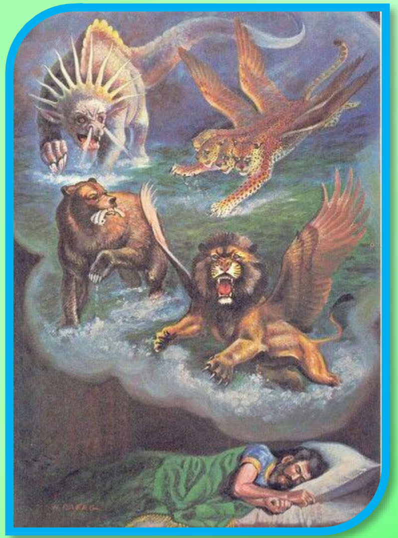

उसकी भविष्यवाणियाँ आज हमें उस भाग की पूर्ति की घोषणा करने में सहायता करती हैं जो अभी पूरा होना बाकी है: परमेश्वर के राज्य का आगमन (दानिय्येल 2:44; 7:27)।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला: मार्ग सीधा करनेवाला भविष्यद्वक्ता

यूहन्ना ने कहा, "जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है: 'मैं जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूँ कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।'" (यूहन्ना 1:23)

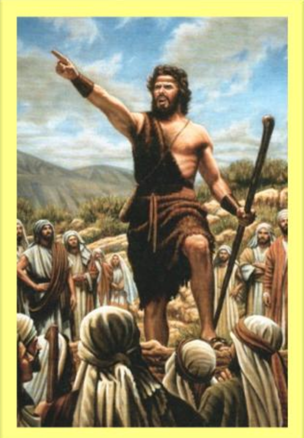

अन्य भविष्यद्वक्ताओं—जैसे शमूएल या यिर्मयाह—की तरह, यूहन्ना को जन्म लेने से पहले ही अलग ठहराया गया था। उसे मसीहा के अग्रदूत के रूप में एलिय्याह का कार्य करने के लिए बुलाया गया था (लूका 1:13-17)।

उसका सादा जीवन और पाप की घोषणा करने तथा तत्काल पश्चाताप का आह्वान करने का उसका दृढ़ विश्वास बहुतों को बपतिस्मा लेने के लिए प्रेरित करता था (मरकुस 1:4-6)। उसकी सेवकाई ने इस्राएल में एक ऐसा परिवर्तन ला दिया जिसका शैतान केवल कमजोर रूप से ही विरोध कर सका और अंततः भविष्यद्वक्ता की मृत्यु का कारण बना (लूका 9:9)।

यूहन्ना का कार्य (जो एलिय्याह का कार्य भी है) अब हमारा कार्य है। हमें यीशु के आगमन की तैयारी करने के लिए बुलाया गया है, ताकि हम सब लोगों को यीशु की प्रायश्चित की मृत्यु के द्वारा पश्चाताप और उद्धार के सुसमाचार की घोषणा करें।

यह कोई सुख-सुविधा का मार्ग नहीं है। यह विश्वासयोग्यता, दृढ़ विश्वास और समर्पण की माँग करता है। सुरक्षा की गारंटी नहीं है, लेकिन अनन्त जीवन की गारंटी है (हमारे लिए और उन लोगों के लिए जो आज इस सन्देश को स्वीकार करते हैं)।

“आज पृथ्वी पर परमेश्वर की कलीसिया के लिए—उसकी दाख की बारी के रखवालों के लिए—भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दिए गए सलाह और चेतावनी के सन्देश विशेष रूप से मूल्यवान हैं, जिन्होंने मानवजाति के लिए उसके अनन्त उद्देश्य को स्पष्ट किया है। भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं में, खोई हुई जाति के लिए उसका प्रेम और उनके उद्धार की उसकी योजना स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। [...] और आज उसकी कलीसिया के लिए—उन लोगों के लिए जो उसकी दाख की बारी में विश्वासयोग्य रखवालों के रूप में सेवा कर रहे हैं—परमेश्वर का सन्देश वही है जो पुराने समय के भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था: ‘उस समय एक सुन्दर दाख की बारी होगी, तुम उसका यश गाना! 3मैं यहोवा उसकी रक्षा करता हूँ; मैं क्षण क्षण उसको सींचता रहूँगा। मैं रात–दिन उसकी रक्षा करता रहूँगा, ऐसा न हो कि कोई उसकी हानि करे’ (यशायाह 27:2-3)”

ई जी व्हाइट (भवक्ताओं और राजाओं, पृष्ठ 22)

परिशिष्टः एलेन जी. व्हाइट का भविष्यद्वक्ता के रूप में बुलावा

एलेन गोल्ड हार्मन को दिसंबर 1844 में अपना पहला दर्शन हुआ, जब वह 17 वर्ष की थी।

विलियम मिलर ने दानिय्येल 8:14 की भविष्यवाणी की व्याख्या इस प्रकार की थी कि उसमें 1843 में यीशु के आगमन की घोषणा की गई है। बाद में 22 अक्टूबर, 1844 की तारीख निर्धारित की गई। लेकिन यीशु नहीं आया।

इसी परिस्थिति में, एलेन को एक ऐसा मार्ग दिखाया गया जो इस पृथ्वी से स्वर्गीय यरूशलेम तक जाता था, और एडवेंटिस्ट विश्वासी यीशु के मार्गदर्शन में पवित्र नगर की ओर यात्रा कर रहे थे। यदि उनकी आँखें यीशु पर टिकी रहतीं, तो वे उस मार्ग पर आगे बढ़ते। यदि वे अपनी दृष्टि हटा लेते, तो वे उस मार्ग से गिर जाते।

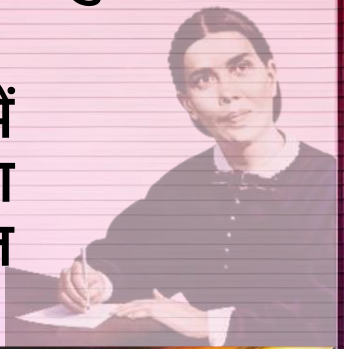

इस दर्शन के द्वारा, परमेश्वर ने विश्वासियों को आश्वस्त किया कि वे सही मार्ग पर थे। यद्यपि आरम्भ में बहुत कम लोगों ने एलेन पर विश्वास किया, लेकिन अंततः उसे भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकार किया गया। उसके सन्देशों ने आरम्भ से ही एडवेंटिस्ट लोगों को प्रोत्साहित और मार्गदर्शन दिया, और आज भी वे ऐसा ही करते हैं।